

## "समकालीन पत्रकारिता के बहुआयामी क्षेत्र : स्वरूप, विस्तार एवं प्रासंगिकता"

-डॉ ममता गुप्ता

सहायक आचार्य (संस्कृत)

टांटिया यूनिवर्सिटी, श्रीगंगानगर, राजस्थान

### शोध सार

समकालीन पत्रकारिता जनसंचार का सशक्त माध्यम बनकर बहुआयामी स्वरूप धारण कर चुकी है। यह केवल सूचना तक सीमित न रहकर वाणिज्य, अर्थव्यवस्था, ग्रामीण विकास, शिक्षा, विज्ञान, खेल, संस्कृति, चलचित्र, रेडियो, टेलीविजन, अनुसंधान एवं कृषि जैसे विविध क्षेत्रों को समाहित करती है। पत्रकारिता वर्तमान में जनमत निर्माण, नीतिगत विमर्श, सामाजिक सरोकारों के प्रतिनिधित्व एवं जागरूकता के क्षेत्र में केंद्रीय भूमिका निभा रही है। तकनीकी प्रगति ने इसकी पहुँच और प्रभाव को विस्तार दिया है। आज यह लोकतंत्र का सजग प्रहरी बनकर राष्ट्रीय विकास, वैचारिक उन्नयन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की दिशा में सतत योगदान दे रही है।

### शब्द कुंजी

सम्प्रेषणीयता, प्रक्षेपण, सम्पृक्तता, अन्विति, अभिसरणशील, बहिर्मुखीकरण, अनुक्रियाशीलता, लोकाभिमुखता, विश्लेषणपरक, प्रत्यास्थता, अर्थवत्ता, तर्कसंगतता, संवादात्मकता, समष्टिगत, विमर्शात्मक, नवोन्मेषी, तात्त्विकता, बहुस्तरीयता, परिपुष्टि, सन्दर्भबद्धता, प्रामाणिकता, वैधानिकता।

समाचार-पत्र जनता की प्रतिनिधि संस्था है। समाचार-पत्र रूपी संसद का कभी सत्रावसान नहीं होता। जिस प्रकार संसद में विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की जाती है, विचार-विमर्श किया जाता है, सरकार का ध्यान आकृष्ट किया जाता है, उसी प्रकार समाचार-पत्रों का स्वरूप भी व्यापक तथा बहुआयामी होता है। यह पत्रकारिता विविध जन समस्याओं से सम्बन्धित होती है। जन समस्याओं को प्रशासन के सम्मुख प्रस्तुत कर, रचनात्मक विमर्श को भी प्रोत्साहित करती है। आधुनिक पत्रकारिता के पाँच महत्वपूर्ण भाग किए जा सकते हैं –

1. समाचार पत्र-पत्रिकाएँ
2. रेडियो
3. टेलीविजन
4. विज्ञापन
5. चलचित्र

यहाँ मूल अभिप्राय समाचार-पत्र, रेडियो तथा टेलीविजन की पत्रकारिता से है। वर्तमान पत्रकारिता के प्रमुख क्षेत्र निम्न हैं-

### वाणिज्य पत्रकारिता

लोकतन्त्रीय अर्थव्यवस्था में वाणिज्य व्यवसाय का महत्वपूर्ण स्थान है। व्यापार एवं उद्योग एक-दूसरे के पूरक हैं। विश्व के सभी प्रजातन्त्रीय देशों में जनजीवन के राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक पक्षों पर प्रकाश डालने वाले समाचारपत्रों में वाणिज्य एवं आर्थिक विषयक समाचारों की विशेष भूमिका होती है। जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है, उसी प्रकार वाणिज्य व्यापार को देश की आर्थिक गतिविधियों का दर्पण कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

वाणिज्य पत्रकारिता के अन्तर्गत दैनिक बाजारभाव, उसकी निष्पक्ष समीक्षा, विभिन्न व्यवसाय, उद्योगों की गतिविधियाँ, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय उत्पादनों की जानकारी, उनका परिचय, देश-विदेश की आर्थिक समस्याएँ, मुद्रा विनिमय, वस्तुओं के मूल्यों के भाव, बाजारों के दैनिक भावों के उतार-चढ़ाव, कराधान अधिनियम, वाणिज्य एवं उद्योग से सम्बद्ध लेख, समाचार विज्ञप्तियाँ आदि का प्रकाशन होता है।

वाणिज्य व्यवसाय के पृष्ठों का समावेश भारतीय समाचारपत्रों, विशेषकर भाषायी पत्रों में वर्तमान काल में हुआ है। आज हिन्दी एवं भाषायी समाचार पत्रों में भी वाणिज्य एवं आर्थिक पत्रकारिता का विकास तीव्र गति से हो रहा है और प्रायः सभी समाचारपत्र इसके लिए एक पृष्ठ दे रहे हैं।

### आर्थिक पत्रकारिता

आधुनिक युग अर्थ प्रधान युग है। तीव्र गति से प्रचलित औद्योगीकरण ने विश्वव्यापी अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है। कुछ वर्षों पूर्व भारत में आर्थिक समाचारों के प्रति न तो पत्र-सम्पादकों की रुचि थी और न ही पाठकों की। हिन्दी समाचार-पत्रों की स्थिति तो और भी दयनीय थी। देश और विदेश के अर्थ जगत् से सम्बद्ध प्रत्येक गतिविधि आर्थिक पत्रकारिता का विषय हो सकती है। आर्थिक योजनाएँ, बाजार समाचार, मुद्रा बाजार, पूँजी बाजार, वस्तु बाजार आदि के समाचार तथा उनसे सम्बन्धित विश्लेषणात्मक लेख आदि वर्तमान काल में पत्र-पत्रिकाओं में बहुतायत से प्रकाशित होने लगे हैं। इस प्रकार विविध आर्थिक पत्र-पत्रिकाएँ अस्तित्व में आई हैं, जैसे 'बिजनेस इंडिया', 'बिजनेस टुडे', 'बिजनेस वर्ल्ड', 'फिनांसियल विजर्ड', 'मनी', 'दलाल', 'स्ट्रीट कैपिटल मार्केट', 'बिजनेस स्टैंडर्ड', 'व्यापार', 'कारोबार' आदि। 1991 ई. से पूर्व भारतीय समाचारपत्रों में आर्थिक समाचारों का कोई विशेष महत्त्व नहीं था। प्रायः हिन्दी समाचारपत्रों में ऐसे समाचारों को अन्तिम पृष्ठ पर स्थान दिया जाता था।

भारत सरकार ने 1991 ई. में जैसे ही उदारीकरण, स्वतन्त्र अर्थव्यवस्था, निजीकरण एवं भूमंडलीकरण की नीतियों को अपनाया, तो देश की अर्थव्यवस्था में विचलन हुआ। मीडिया के विभिन्न माध्यमों में आर्थिक समाचारों को स्थान प्राप्त होने लगा। अनेक टीवी न्यूज चैनलों ने हिन्दी एवं अंग्रेजी में स्वतन्त्र रूप से 'आर्थिक न्यूज चैनल' स्थापित किए। ये चैनल अत्यन्त लोकप्रिय हुए और इन्हें विभिन्न उद्योगों से विज्ञापन भी प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुआ। आज आर्थिक गतिविधियों का प्रत्येक क्षेत्र में इतना अनुशीलन, शोध, चिन्तन-मनन हुआ है कि आर्थिक पत्रकारिता अपने आप में एक स्वतन्त्र विषय बन गया है।

### ग्रामीण पत्रकारिता

ग्रामीण पत्रकारिता पोषण, स्वास्थ्य, कृषि उत्पादन सम्बन्धी तकनीक, परिवार कल्याण तथा विकासात्मक गतिविधियों के विषय में जानकारी देने का महत्त्वपूर्ण साधन है। भारत ग्राम प्रधान देश है। देश की अधिकांश जनता गाँवों में निवास करती है अतः देश की ग्रामीण जनता की समस्याओं, उनकी आशा-आकांक्षाओं को पत्रकारिता के माध्यम से प्रस्तुत करना समाचार-पत्रों का प्रमुख दायित्व है।

'इंडियन रूल प्रेस एसोसिएशन'(आई.पी.ए.) के मतानुसार "जिन समाचार पत्रों में 40 प्रतिशत से अधिक सामग्री गाँवों के विषय में, कृषि, उद्यान, पशुपालन, बीज, खाद, कीटनाशक, पंचायतीराज, सहकारिता आदि विषयों पर होगी, उन्हीं पत्रों को ग्रामीण पत्र माना जाएगा" स्पष्ट है कि ग्रामीण आवश्यकताओं से सम्पृक्त समाचार, आलेख आदि ग्रामीण पत्रकारिता की विषय-वस्तु है। जब ग्रामीण पत्रों पर वार्ता की जाती है तब इसका तात्पर्य उन लघु पत्रों से है जो कम प्रसार संख्या में होने पर भी अल्प समुदाय की उन आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं की पूर्ति करते हैं, जो शहरी प्रेस के लिए सम्भव नहीं है। सामान्यतः वर्तमान काल में प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय पत्रों में भी ग्रामीणों के लिए विशेष कॉलम प्रकाशित किए जाने लगे हैं। इन विषयों को प्रवीण दीक्षित ने इस प्रकार वर्गीकृत किया है-

1. बीज शास्त्र
2. मुद्रा एवं कृषि रसायन,
3. कृषि अर्थशास्त्र,
4. कृषि कीटशास्त्र और जीव विज्ञान,
5. कृषि प्रसार,
6. शस्य विज्ञान,
7. पशुपालन एवं दुग्ध उद्योग,
8. वंशागति और पादप प्रजनन,
9. उद्यान शास्त्र,
10. पादप रोग विज्ञान,
11. पादप क्रिया शारीरिकी,
12. भूमि संरक्षण।<sup>2</sup>

ग्रामीण पत्रकारिता का अपना स्वस्थ इतिहास है। 1915 ई. में 'कृषि सुधार' नामक पत्र का प्रकाशन हुआ। 1948 ई. में बंगाल से 'कार्यजर्नल' प्रकाशित हुआ। 'कुरुक्षेत्र' (1950 ई.), 'सेवाग्राम', 'सहकारी', 'पशुपालन', 'कृषक समाचार' (1950-1960 ई.),

‘धरतीगोवर्धन’, ‘उन्नत खेती’, ‘कृषि चयनिका’, ‘आज की खेती’ (नई दिल्ली), ‘गाँव’ (पटना), ‘ग्रास भूमि’ (इलाहाबाद), ‘कृषि विकास’ (जयपुर), ‘किसानोत्थान’ (लखनऊ), ‘उजाला’ (लखनऊ), ‘प्रौढ़ शिक्षा’ (दिल्ली), ‘ग्रामीण जनता’ (रुड़की) आदि पत्रों का प्रकाशन हुआ। वर्तमान में ‘हिमाचल कृषि सूचना’ (शिमला, 1961 ई.), ‘कृषि विकास’ (राजस्थान), ‘किसान भारत’ (नैनीताल), ‘कृषि सेतु’ (सुल्तानपुर) प्रकाशित हो रहे हैं।

### शैक्षणिक पत्रकारिता

शैक्षणिक पत्रकारिता, पत्रकारिता का ऐसा उपेक्षित पक्ष है जिस पर समुचित ध्यान आज तक नहीं दिया गया है। शैक्षणिक पत्रकारिता को एक विधा के रूप में विकसित करने का प्रयास लगभग दस वर्षों से एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा किया जा रहा है। एन.सी.ई.आर.टी. ने देश के अनेक अंचलों में इस दृष्टि से उपयोगी गोष्ठियों और कार्यशालाओं का आयोजन किया है। शिक्षा का पत्रकारिता से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। एक स्तर पर दोनों के उद्देश्यों में भी समानता है। जहाँ पत्रकारिता शिक्षा और सूचना का सार्थक माध्यम है, वहीं शिक्षा का भी यही उद्देश्य है। पत्रकारिता यदि सामाजिक परिवर्तन का सशक्त साधन है तो शिक्षा की भी मानव विकास में तथा उसे सामाजिक प्राणी बनाने में महती भूमिका है। शिक्षा और पत्रकारिता का यह समन्वित संश्लिष्ट रूप शैक्षणिक पत्रकारिता कहा जा सकता है।

इस दृष्टि से विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों द्वारा प्रचलित शैक्षणिक प्रवृत्तियों, शिक्षा जगत् की घटनाओं तथा शैक्षणिक समस्याओं को जनसंचार माध्यमों के द्वारा जनता तक पहुँचाना शैक्षणिक पत्रकारिता है। शिक्षा जगत् की विकासमान प्रवृत्तियों के प्रति ‘सामान्य जन’ का योगदान तभी सम्भव है जब शैक्षणिक पत्रकारिता का समुचित विकास हो सके। शैक्षणिक पत्रकारिता, पत्रकारिता का वह सकारात्मक पक्ष है जिसके समुचित विकास से समाज में वैचारिक चेतना तो विकसित होगी ही, शिक्षण संस्थाओं के छात्र-अध्यापक समुदाय में परस्पर सौहार्द का वातावरण भी उत्पन्न हो सकेगा। शिक्षा संस्थाओं में अन्तर्सम्बन्ध स्थापित करने का यह सशक्त माध्यम बन सकता है। उच्च शिक्षा को प्रत्यक्ष रूप से समाज तथा ‘सामान्य जन’ तक इसके द्वारा पहुँचाया जा सकता है।

### विज्ञान पत्रकारिता

वर्तमान युग विज्ञान और तकनीक का युग है। नवीन वैज्ञानिक खोजों और नवीन तकनीकों के चमत्कारिक परिणामों ने आज विश्व के सम्पूर्ण वातावरण को परिवर्तित कर दिया है। मानव के आचार, विचार एवं दैनिक व्यवहार में विशेष परिवर्तन आया है। पत्रकारिता का विज्ञान से जनमानस को परिचित कराने में महत्त्वपूर्ण योगदान है। डॉ. ए. एन. जान नाइट के अनुसार “समाचारपत्र, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन तथा अन्य प्रचार माध्यमों के लिए वैज्ञानिक समाचारों, विचारों एवं सूचनाओं की रिपोर्टिंग, लेखन, सम्पादन और प्रस्तुतीकरण से सम्बद्ध विभिन्न कार्य करना, विज्ञान पत्रकारिता है” अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक सूचनाओं, समाचारों और विचारों को प्राप्त करने, संशोधित करने और प्रस्तुत करने की विधाओं का क्रमबद्ध, सुसंगठित और सुव्यवस्थित अध्ययन विज्ञान पत्रकारिता है।

समाचारपत्रों में विज्ञान के स्तम्भों की संख्या में अभिवृद्धि हुई है। इस विषय के पाठक भी तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। विज्ञान विषयक अनेक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। रेडियो एवं टेलीविजन ने विज्ञान लेखन और विज्ञान समाचार को समृद्ध किया है। विज्ञान का लेखन, प्रस्तुतीकरण सरल और सुबोध भाषा में होना चाहिए। विज्ञान को सामान्यजन से सम्बद्ध करने में मीडिया का प्रयोग विज्ञान के लेखकों एवं पत्रकारों द्वारा अधिकाधिक होना चाहिए।

### खेल पत्रकारिता

खेलों का मानव-जीवन के साथ प्राचीन सम्बन्ध है। मनोरंजन तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से भी मानव ने इनके महत्त्व को स्वीकार किया है। आधुनिक विश्व में विभिन्न देशों के मध्य होने वाली प्रतियोगिताओं के कारण अनेक खेल एवं खिलाड़ी लोकप्रिय होने लगे हैं। ओलम्पिक तथा एशियाई आदि अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के आयोजनों ने भी खेल के प्रति रुचि उत्पन्न की है। राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट, हॉकी, स्पर्धात्मक दौड़ें, गोल्फ, फुटबाल, शतरंज, टेनिस, पोलो आदि खेलों की ओर जनसामान्य के आकर्षण में वृद्धि हुई है।

सामान्य रूप से ही कोई दिवस ऐसा हो, जब राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी न किसी प्रतियोगिता का आयोजन नहीं हो रहा हो अतः खेलों के प्रति जन-जन की रुचि को देखते हुए पत्र-पत्रिकाओं में खेलों के समाचार तथा उनसे सम्बन्धित नियमित स्तम्भों का प्रकाशन किया जाता है। समाचारपत्रों में खेल समाचारों के लिए एक पूर्ण पृष्ठ दिया जाता है। खेल विषयक पत्रिकाएँ भी अधिक संख्या में प्रकाशित हो रही हैं। ‘खेल खिलाड़ी’, ‘क्रिकेट सम्राट’, ‘खेल समाचार’, ‘भारतीय कुश्ती’, ‘स्पोर्ट्स वीक’, ‘खेल युग’ आदि पत्रिकाओं ने खेल पत्रकारिता को समृद्ध किया है। खेल पत्रिकाएँ समय-समय पर खेल विशेषांक भी प्रकाशित करती हैं।

प्रिंट मीडिया की अपेक्षा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने विशेषकर टेलीविजन चैनलों ने सीधे प्रसारण देकर खेल पत्रकारिता का स्वरूप परिवर्तित कर दिया है। आज खेल संवाददाता का कार्य मात्र मैच की रिपोर्टिंग कर देना ही नहीं रह गया है अपितु अब उसे उन प्रश्नों का प्रत्युत्तर भी देना होता है, जो टेलीविजन पर मैच देख रहे दर्शकों के मन में उत्पन्न हुए हैं। अब खेल परिणामों के अतिरिक्त खेल की प्रक्रिया का विश्लेषण देना महत्वपूर्ण है।

वर्तमान में हिन्दी और अंग्रेजी के सभी राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक न्यूज चैनलों ने खेल समाचारों को विशेष स्थान दिया है। रेडियो एवं टीवी समाचार के पश्चात् खेल समाचारों की जानकारी दी जाती है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय खेलों पर विषय-विशेषज्ञों के द्वारा उन पर विमर्श किया जाता है। इस विमर्श में दर्शक भी सम्मिलित किए जाते हैं। संक्षिप्ततः खेल पत्रकारिता का अतीत भले ही अभावग्रस्त रहा हो, परन्तु भविष्य उज्ज्वल है।

### साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रकारिता

साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रकारिता का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त वृहत् है। भाषा, भाषा सम्बन्धी विविध विचार, काव्य, कथा, निबन्ध, नाटक आदि के विविध रूप-वर्ग, उन पर आधारित विचार-विमर्श, संवाद, गोष्ठियाँ आदि, पुस्तक समीक्षा, साहित्यिक वाद-विवाद, लेखकों के शिविर, यात्राएँ, भ्रमण, रिपोर्टाज, पुरस्कार, साहित्य अकादमियाँ एवं लेखकीय संगठन आदि गतिविधियों को साहित्यिक पत्रकारिता के माध्यम से उचित प्रोत्साहन दिया जाता है, वहीं सांस्कृतिक क्षेत्र तो और भी वृहत् है। रंगकर्म, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य तथा क्रीडा, फिल्म, मनोरंजन आदि के विपुल रूप सांस्कृतिक गतिविधि के अंग हैं। उनके विषय में पाठक को रोचक और सारसूचक जानकारी देना सांस्कृतिक पत्रकारिता का लक्ष्य है।

### रेडियो पत्रकारिता

आज का युग इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया संचार का सशक्त एवं लोकप्रिय माध्यम है। इसमें टेलीविजन, रेडियो, फिल्म, इंटरनेट, वीडियो, स्लाइड आदि माध्यम सम्मिलित हैं। रेडियो पत्रकारिता की दृष्टि से आकाशवाणी के वे कार्यक्रम महत्वपूर्ण हैं, जिसमें समाचार तत्त्व अधिक रहते हैं। आकाशवाणी के समाचार कार्यक्रमों को 'समाचार सेवा प्रभाग' तैयार करता है। समाचार आकाशवाणी का व्यापक रूप से सुना जाने वाला प्रसारण है। समाचार के अतिरिक्त समाचार प्रभाग, समाचार आधारित कार्यक्रम तैयार करता है। समाचारों के अतिरिक्त, सामयिकी, जिले अथवा राज्य का पत्र, रेडियो न्यूजरील, समाचार दर्शन आदि कार्यक्रम प्रमुख हैं, जो रेडियो पत्रकारिता की परिधि में आते हैं।

### चलचित्र पत्रकारिता

चलचित्र से हमारा समाज आज अत्यधिक प्रभावित है अतः पत्रकारिता भी चलचित्र से अस्पृश्य कैसे रह सकती है? फिल्मों की समीक्षा, फिल्मी कलाकारों के साक्षात्कार, उनकी गतिविधियाँ एवं फिल्मों पर समीक्षात्मक लेख आदि चलचित्र पत्रकारिता के प्रमुख पक्ष हैं। इस समय तो हिन्दी-अंग्रेजी भाषा में अनेक फिल्मी पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं, जिनकी पाठक संख्या भी अधिक है। जैसे- 'दैनिक भास्कर' (नवरंग), 'राजस्थान पत्रिका' (बॉलीवुड) आदि।

### टेलीविजन पत्रकारिता

टेलीविजन पत्रकारिता के अन्तर्गत टेलीविजन समाचार, फीचर, समसामयिक वार्ताएँ आदि हैं। वर्तमान में टेलीविजन चैनलों ने 'समाचार चैनल' के अन्तर्गत अनेक चैनल प्रारम्भ कर दिए हैं, जैसे- 'आज तक', 'स्टार न्यूज', 'राष्ट्रीय सहारा', 'जी न्यूज' आदि। यही समाचार कार्यक्रम टीवी पत्रकारिता का क्षेत्र है। इसके लिए विशेष तकनीकी ज्ञान की भी अपेक्षा होती है। लेखन, शब्द ध्वनि, श्रव्य ध्वनि, दृश्य ध्वनि तथा फिल्म तकनीक का ज्ञान भी टीवी पत्रकार के लिए अपेक्षित है।

### सन्दर्भ पत्रकारिता

आधुनिक पत्रकारिता में सन्दर्भ पत्रकारिता अथवा सन्दर्भ सेवा का विशिष्ट स्थान है। सन्दर्भ सेवा का तात्पर्य सन्दर्भ सामग्री की उपलब्धता है। सम्पादकीय लिखते समय किसी सामयिक विषय पर टिप्पणी लिखने के लिए अथवा कोई लेख आदि तैयार करने की दृष्टि से विशेष सन्दर्भों की भी आवश्यकता होती है। सम्पादकीय विभाग समाचारपत्र प्रतिष्ठान का मस्तिष्क होता है, तो सन्दर्भ विभाग इस मस्तिष्क का स्मृतिकोश है। ज्ञान-विज्ञान के विस्तार तथा यान्त्रिक युग की व्यस्तताओं में कोई भी पत्रकार प्रत्येक विषय को स्मरणशक्ति के आधार पर नहीं लिख सकता। अतः पाठकों को सम्पूर्ण जानकारी देने के लिए आवश्यक है कि पत्र-प्रतिष्ठान के पास अच्छा सन्दर्भ साहित्य संगृहीत हो। **कश्मीरी लाल शर्मा** ने 'सन्दर्भ पत्रकारिता' विषयक लेख में सन्दर्भ सेवा के आठ वर्ग किए हैं- 1. कतरन सेवा, 2. सन्दर्भ ग्रन्थ, 3. लेख सूची, 4. फोटो विभाग, 5. पृष्ठभूमि विभाग, 6. रिपोर्ट विभाग, 7. सामान्य पुस्तकें, 8. भण्डार विभाग।<sup>3</sup>

## अनुसंधानात्मक पत्रकारिता

**प्रवीण दीक्षित** ने अनुसंधानात्मक पत्रकारिता को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि अनुसंधान पत्रकारिता, पत्रकारिता की वह विधा है, जिसके द्वारा किसी समसामयिक महत्त्व के विषय, घटना, स्थिति या तथ्यों का वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन, सर्वेक्षण और अनुसंधान करके वास्तविक निष्कर्ष निकाले जाते हैं।<sup>4</sup> अनुसंधान पत्रकारिता में प्रासंगिक विषयों, स्थितियों अथवा तथ्यों के तर्कसम्मत अध्ययन और अनुसंधान का परीक्षण कर निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है।

पत्रकारिता के इस क्षेत्र में जनमाध्यम और पत्रकारिता से सम्बन्धित विविध विषयों, प्रश्नों और समस्याओं का सर्वेक्षण किया जाता है। वर्तमान में जनमाध्यम तथा पत्रकारिता का क्षेत्र इतना व्यापक एवं विस्तृत हो गया है कि इसमें अधिक अध्ययन-अनुसंधान की सम्भावनाओं में अभिवृद्धि हुई है। इस दृष्टि से इस क्षेत्र में पाठक, श्रोता, दर्शक, विज्ञापन, जनमत, प्रकाशित सामग्री का विश्लेषण, जन-माध्यमों के प्रभाव, रेडियो, दूरदर्शन के कार्यक्रमों का स्तर आदि विविध विषयों पर अध्ययन-अनुसंधान किया जा सकता है। राजस्थान पत्रिका ने ‘**पत्रिका शोध प्रतिष्ठान**’ के माध्यम से इस प्रकार के अनेक अध्ययन प्रकाशित किए हैं।

खोजी पत्रकारिता एवं अनुसंधान पत्रकारिता को स्पष्ट करते हुए **प्रवीण दीक्षित** ने लिखा है “एक व्यापक अर्थ में खोजी पत्रकारिता को भी अनुसंधान पत्रकारिता का एक रूप या प्रकार कहा जा सकता है परन्तु खोजी पत्रकारिता और अनुसंधान पत्रकारिता में एक सबसे प्रमुख अन्तर यह होता है कि खोजी पत्रकारिता में किसी घटना या स्थिति का विधिवत् योजनाबद्ध वैज्ञानिक रूप से अध्ययन या अनुसंधान नहीं किया जाता, जबकि अनुसंधान पत्रकारिता में ऐसा करना अनिवार्य है”<sup>5</sup>

## कृषि पत्रकारिता

कृषि पत्रकारिता का लक्ष्य किसान पाठकों को सरकार एवं समाज की गतिविधियों की जानकारी देना और कृषि का पोषण तथा उनकी उन्नति है। भारतीय ग्रामीण समाचारपत्र संघ ने उन्हीं पत्र-पत्रिकाओं को कृषि-पत्र माना है, जिनका अधिकांश विषय कृषि की जानकारी से पूर्ण हो। कृषि-विज्ञापन लेने की प्रतिस्पर्धा में देश के शहरों में प्रकाशित समाचारपत्रों में भी यदा-कदा कृषि परिशिष्ट प्रकाशित होने लगे हैं, परन्तु वे कृषि पत्र नहीं कहे जा सकते हैं। कृषि पत्रकारिता कतिपय प्रतिमानों में ग्रामीण पत्रकारिता से भिन्न है। कृषि पत्रकारिता का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। कृषि पत्रकारिता के अन्तर्गत निम्न विज्ञानों एवं उनकी शाखाओं को सम्मिलित किया जा सकता है<sup>6</sup>:-

1. मृदा विज्ञान
2. कृषि मौसम विज्ञान
3. पादप प्रजनन विज्ञान
4. कृषि कीट विज्ञान
5. पादप रोग विज्ञान
6. शस्य विज्ञान
7. जैव प्रौद्योगिकी विज्ञान
8. मत्स्य विज्ञान
9. पर्यावरण विज्ञान
10. खाद्य प्रौद्योगिकी विज्ञान
11. सिंचाई एवं जल निकास इंजीनियरिंग
12. उद्यान विज्ञान
13. कुक्कुट विज्ञान
14. कृषि विज्ञान
15. ग्रामोद्योग
16. कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक एवं संचार इंजीनियरिंग
17. दुधारु, पशुपालन एवं डेयरी उद्योग
18. फसल विक्रय एवं प्रबन्ध
19. बीज उत्पादन एवं प्रमाणीकरण
20. अणु जैविकी एवं अनुवांशिक इंजीनियरिंग
21. पशु विज्ञान

इसके अतिरिक्त भी पत्रकारिता के अनेक क्षेत्र हैं। जैसे-राजनैतिक पत्रकारिता, व्याख्यात्मक पत्रकारिता, बाल पत्रकारिता, फोटो पत्रकारिता, धार्मिक-आध्यात्मिक पत्रकारिता, ब्रेल पत्रकारिता, समर पत्रकारिता इत्यादि। यद्यपि भारत में समाचार पत्रों का प्रारम्भ,

वास्तविक अर्थ में अंग्रेजों द्वारा हुआ था, परन्तु वर्तमान में यह पूर्णतः अपने देश की वस्तु है और देश की ही भूमि में उत्पन्न वृक्ष के समान इसमें प्राण और जीवनदायिनी शक्ति है। कला, शिल्प, सम्पादन, समाचार-संकलन और शीर्षक-संचयन तथा सम्पादकीय टिप्पणी आदि दृष्टियों से भारतीय पत्र-पत्रिकाओं का विश्व की पत्रकारिता में महत्वपूर्ण स्थान हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि व्यक्ति और समाज के जीवन को अत्यन्त प्रभावित करने वाली पत्रकारिता वह विधा है जो स्वसंस्कृति और प्राचीन संस्कृति परम्परा के प्रति समाज के नवशिक्षित नवयुवकों के सुप्त स्वाभिमान को जागृत करने एवं समाज को एक नवीन दिशा का बोध कराने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है।

### सन्दर्भ

1. डॉ. वेद प्रताप वैदिक : हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम में, मदनमोहन गुप्ता का लेख 'ग्रामीण पत्रकारिता', पृ.362
2. जनमाध्यम और पत्रकारिता, भाग 2, पृ. 605
3. डॉ. वेद प्रताप वैदिक : हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम में, पृ. 610
4. जनमाध्यम और पत्रकारिता, भाग 2, पृ. 444
5. जनमाध्यम और पत्रकारिता, भाग 2, पृ. 446
6. सम्पूर्ण पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ.37